शेख़ फ़रीद – सबद ९४

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥

सार: समय, मूर्तिकार की तरह काम करता है जो हमारे अस्तित्व की ऊपरी परतों को बड़ी सावधानी से तराशता है। पत्थर का वह टुकड़ा भले ही ठोस दिखाई दे जो हमारी भूमिकाओं और पहचान का प्रतीक है, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, हर पल एक छैनी की तरह काम करता है। वह परतों को हटाकर उनके नीचे छिपे गहन सत्यों को उजागर करता है। यह प्रक्रिया हमें अपनी सोच को नया आकार देने, उधार ली गई पहचानों को त्यागने और उन शाश्वत वास्तविकताओं को सामने लाने का अवसर देती है जो बाहरी परिस्थितियों के भटकावों को दूर करने पर उभरती हैं।

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
कौऐ ने कंकाल को कुरेद कर उसमें से सारा मांस खा लिया। यह प्रभावशाली चित्रण दर्शाता है कि कैसे समय हमारी पहचान को मिटा देता है और हमारी धारणाओं को बदल देता है जिससे अस्तित्व के अखंडनीय सत्य उजागर होते हैं।

ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥
इन दोनों आँखों को मत छुओ, मुझे अब भी प्रियतम के दर्शन की आस है। यह अंतर्दृष्टि की शक्ति को रेखांकित करता है जो शारीरिक क्षय को स्वीकार करते हुए भी, चेतना को ही जीवन का सच्चा उद्देश्य मानती है। (९१)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद ज़ोर देते हैं कि यह समझना ज़रूरी है कि जहाँ अंतरात्मा सभी भौतिक सुख-सुविधाओं और जीवन-शक्ति का त्याग कर सकती है, वहीं अंतर्दृष्टि की खोज अत्यंत आवश्यक और

अनिवार्य है। एक सच्चा साधक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तब तक तत्पर रहता है, हर परिस्थिति में उस मार्ग को बनाए रखता है जो उसे सत्य की ओर ले जाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com